

अपना इलाज अपने हाथ (Cure Your Self)

3200 से अधिक बीमारियों से सम्बंधित पैरासाइट्स को समाप्त करके आपको निरोगी और ऊर्जावान बनाने में बेजोड़...

Indian Zapper Deluxe



(3 IN 1)

3 Functions in
1 Machine

**COLLOIDAL
SILVER MAKER**
+
PULSAR
+
ZAPPER

For Every Family, a Life-Saving Safety Shield



(ZAPPER)



(PULSAR)



(COLLOIDAL SILVER MAKER)

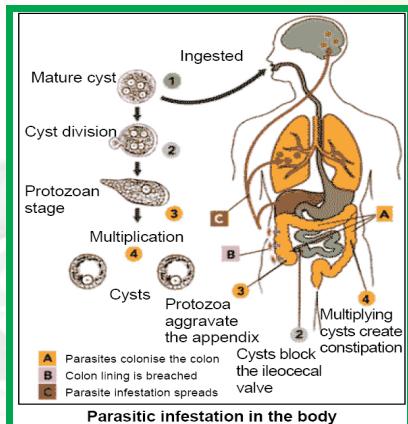
पैरासाइट्स

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन (WHO) का अनुमान है कि दुनियां की तकरीबन 21.7% आबादी राउंडवर्म से पीड़ित है। ये हमारी सेहत के कितने बड़े दुश्मन हैं इसका अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि अंतिड़ियों के अंदर ये 12 इंच तक लम्बे हो सकते हैं। एक दिन में ये 3,00,000 अंडे दे सकते हैं और लार्वा के राउंडवर्म में बदलने के दो महीने के भीतर ये नए वर्म भी अंडे देने लायक हो जाते हैं। जी हाँ, हमारे शरीर में राउंडवर्म, टेपवर्म, फ्लैटवर्म और प्रोटोजोआ जैसे पैरासाइट्स अपना घर बनाये होते हैं। प्रोटोजोआ को छोड़कर ज्यादातर पैरासाइट्स बिना माइक्रोस्कोप के देखे जा सकते हैं, फिर भी हममें से ज्यादातर लोगों को इनकी मौजूदगी की जानकारी नहीं होती।

शरीर की तमाम बीमारियों में पैरासाइट्स का कुछ न कुछ रोल जरूर होता है, इसलिए इस लेख में पैरासाइट्स से मुक्ति सम्बंधित जानकारी उपलब्ध कराने की कोशिश की है।

आपका शरीर - पैरासाइट्स का घर

अगर मैं आपसे पूछूँ “कहाँ आपके शरीर में पैरासाइट्स तो नहीं है?” पहले तो आप इस सवाल को एक भद्दा मजाक समझेंगे, फिर सहज भाव से कहेंगे, “पैरासाइट्स, वो भी मेरे शरीर में! ऐसा हो ही नहीं सकता।” हम सब यही समझते हैं कि पैरासाइट्स सिर्फ दूसरों के शरीर में होते हैं, हमारे शरीर में नहीं। मेरी भी यही सोच थी, लेकिन डॉ. हुल्डा क्लार्क की पुस्तक “द क्योर ऑफ आल डिजीजेज” पढ़ने के बाद मेरी राय बदल गयी। जब मैंने उनके बताये अनुसार, जैपर, पल्सर और कोलाइडल सिल्वर को प्रयोग में लाकर पैरासाइट्स कर्तींज किया तो स्टूल के साथ निकले वर्म्स को देखकर हैरान रह गया। मेरे मित्रों-सम्बन्धियों का अनुभव भी कुछ ऐसा ही रहा था।



डॉ. क्लार्क के अनुसार-

1. हममें से हर कोई अपने जीवन में कभी न कभी, किसी न किसी तरह के पैरासाइट्स का शिकार अवश्य होता है।
2. पैरासाइट्स और अस्वास्थ्यकर टिश्यूज “पॉजिटिवली चार्ज्ड” होते हैं।
3. जब जैपर, पल्सर की सहायता से शरीर में मामूली वोल्टेज का करंट प्रवाहित किया जाता है तो पैरासाइट्स का विद्युतीय गुण बदलकर उनका नाश हो जाता है। इसी तरह नेगेटिव चार्ज वाले आयन शरीर के बीमार टिश्यूज तक पहुंचकर उन्हें स्वस्थ बनाते हैं।

लक्षण और संकेत

रोग प्रतिरोधक शक्ति की कमी होने पर शरीर में वायरस, बैक्टीरिया, फंगल और (सूक्ष्म परजीवी, राउंडवर्म) की मौजूदगी का पता निम्नलिखित लक्षणों के आधार पर किया जा सकता है-

- बार-बार बैक्टीरियल / वायरल इन्फेक्शन का शिकार होना
- अच्छा खाना-पीना भी शरीर को न लगना
- अनीमिया या आयरन की कमी, पेट में जलन
- अल्सर (क्यूटोनियस), एरिजमा, दाद-खाज, रैशेस, त्वचा में लाली, सूजन आदि
- गैस, पेट फूलना, कब्जियत, डायरिया जैसी पाचन सम्बन्धी गड़बड़ियाँ, जो हमेशा बनी रहती हैं
- भरपेट खाने के बाद भी भूख बनी रहना अथवा भूख कम लगाना और चेहरा पीला पड़ना
- धड़कनें तेज होने, छाती और नाभि के पास दर्द होना
- कान, नाक, एनस, पेनिस में खुजलाहट
- जोड़ों और पेशियों में जलन के कारण दर्द, जो कि ऑर्थराइटिस के दर्द सा जान पड़ता है
- हमेशा थकान, कमजोरी और आलस्य महसूस करना
- पीठ, कंधों, और जाँधों में पीड़ा
- घबराहट और बेचैनी, रात में कई बार नींद का उचटना
- पुरुषों में सेक्स संबंधी गड़बड़ियाँ, स्त्रियों में सेक्स व माहवारी की समस्या

पल्सर से पैरासाइट क्लींज

पल्सर, पैरासाइट्स को मारने का एक सशक्त माध्यम है। इसका इस्तेमाल लिम्फ सिस्टम को गति देने और शरीर में छिपे पैथोजेन्स (पैरासाइट, बैक्टिरिया, वायरस, फंगी, योस्ट आदि) को नष्ट करने में किया जाता है। पल्सर आपके शरीर में मौजूद जीवित पैरासाइट्स को मैग्नेटिक पल्स की सहायता से नष्ट करता है।

पल्सर को इस्तेमाल में कैसे लाएं ?

जैपर की तरह पल्सर को भी शरीर में छुपे नुकसानदेह वायरस, बैक्टिरिया, फंगी व पैरासाइट्स, टेपर्वर्म, रिंगवर्म, राउंडवर्म वगैरह को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है। चित्र में दिखाये गये जैपर (इंडियन जैपर डीलक्स) को जब पल्सर मोड़ पर रखा जाता है तो वह +30 V और -30V के दोहरे वोल्टेज के 50 प्रतिशत ड्यूटी साइकल स्क्वायर वेव (नॉन सानूसाइडल वेव) का निर्माण करता है इसे आप क्रमशः 4 Hz, 16 Hz और 100 Hz की फ्रीक्वेंसी पर रखकर प्रयोग में ला सकते हैं। पैरासाइट्स को मारने के लिए पल्सर को तीनों फ्रीक्वेंसियों पर 10-10 मिनट लगभग 30 मिनट तक दिन में तीन बार इस्तेमाल करें। पल्सर में लगी क्वॉइल को आप सिर और चेहरे को छोड़कर, शरीर के किसी भी हिस्से पर रखकर इस्तेमाल में ला सकते हैं। शरीर के जो हिस्से जैपर के करंट से अछूते रह जाते हैं, पल्सर को वहां रखकर उस हिस्से में छुपे पैरासाइट्स को मारा जा

सकता है, जैसे लिम्फ सिस्टम, पेट और आँतें।

जैपर से पैरासाइट क्लींज

जैपर एक इलेक्ट्रिक (विद्युतीय) उपकरण है, जो एक निर्धारित (लेकिन बहुत कम) मात्रा में बिजली का करंट छोड़ता है। कई हालिया अध्ययन बताते हैं कि मनुष्य के शरीर में, बिल्कुल हल्का (9 वोल्ट या उससे कम) करंट सीधा प्रवाहित करने पर शरीर में मौजूद तरह तरह के वायरस, पैरासाइट्स नष्ट हो जाते हैं और शरीर में वेस्ट्री रिमूवल सिस्टम द्वारा निकाल बाहर कर दिये जाते हैं। इनके बाहर निकलते ही शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है। नतीजतन, हमारे स्वास्थ्य में बड़ी तेजी से सुधार होता है। हम बिल्कुल तरो-ताजा महसूस करने लगते हैं।

उल्लेखनीय है कि इलेक्ट्रिकल करंट (या फिर मैग्नेटिक करंट) से बने निगेटिव “आयन्स” पैरासाइट्स को नष्ट करने का महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। जैपर इसी सिद्धांत पर काम करता है। जैपिंग की प्रक्रिया में जब बिजली का करंट शरीर में प्रवाहित होता है तो सिस्ट या शरीर के भीतर सुरक्षित जगहों में छिपे पैरासाइट्स को छटका लगता है और वे नष्ट होने लगते हैं। ये सूक्ष्म कणों में बदल जाते हैं इनमें मौजूद शरीर के लिए लाभदायक तत्व अवशोषित कर लिए जाते हैं और नुकसानदेह तत्वों, जैसे कि गॉल-ब्लैडर स्टोन्स आदि को बतौर वेस्ट्री शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है।

जैपर कैसे काम करता है ?

सभी जीवित प्राणी अपने अस्तित्व का एहसास, रेडियो स्टेशन से प्रसारित होने वाली फ्रीक्वेंसी की तरह अलग-अलग फ्रीक्वेंसी के प्रसार से करते हैं। जैपर शरीर में छुपे पैरासाइट्स की फ्रीक्वेंसी के लगभग बराबर की फ्रीक्वेंसी प्रवाहित कर, उन्हें गतिहीन बनाकर नष्ट कर देता है। जैपर से निकलने वाला करंट सिर्फ इतना भर होता है कि पैरासाइट्स को खत्म कर सके। इससे शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। यहां दिये गये जैपर में आप 2128 Hz, 10 KHz या 30 KHz की फ्रीक्वेंसी पर जैप कर सकते हैं। प्रत्येक फ्रीक्वेंसी का सात मिनट टाइम मशीन में सैट है जिसपर जैप किया जा सकता है।

एक सुनिश्चित वोल्टेज और फ्रीक्वेंसी पर जैपर द्वारा प्रवाहित करंट पैरासाइट्स को सुन्न कर देता है, जिससे उनकी सफेद रक्त कोशिकाओं से छुपने की क्षमता प्रभावित होती है। ऐसे में सफेद रक्त कोशिकाओं के लिए इनको ढूँढ़ना आसान हो जाता है। ये उन्हें फॉरेन ऑब्जेक्ट यानि शरीर के लिए नुकसानदेह तत्व मान, उन पर हमला कर उन्हे नष्ट कर देती हैं। फिर वे चाहे पैरासाइट हों या बैक्टीरिया; या फिर वायरस या फिर फंगी ही क्यूँ न हों! जैपर की यह सारी प्रक्रिया तकरीबन एक घंटे में पूरी हो जाती है। इसके बाद सफेद रक्त कोशिकाएं मृत हो चुके इन फॉरेन आबजेक्ट को घेर लेती हैं। और फिर ये यूरिन या स्ट्रूल के जरिए शरीर के बाहर निकाल दिये जाते हैं।

जैप कैसे करें ?

जैप करने से पहले दो छोटे सूती कपड़े या तौलिए ले लें। इन्हें नमक मिले पानी में गीला कर निचोड़।

लें। नमक मिले पानी में भीगे सूती कपड़े या तैलिए को एक-एक कॉपर पाइप में लपेट लें। ऐसा करने से बिजली का प्रवाह ज्यादा प्रभावी ढंग से होता है। वैसे भी जैपर से निकलने वाला इलेक्ट्रिक करंट इतना कम होता है कि अगर कपड़ा नमकीन पानी में गीला न किया जाये तो शरीर के भीतर बिजली पहुंच ही नहीं पायेगी।

इस तरह, अब आप जैपिंग के लिए तैयार हो जाएं और पॉवर सोर्स की सहायता से जैपर को बिजली से जोड़ दें।



● अब जैपर के पॉवर स्विच ऑन करें।

- एक-एक हाथ में एक-एक कॉपर पाइप को चित्र दिखाये गये अनुसार मजबूती से पकड़े। ध्यान रहे कि दोनों कॉपर पाइप एक दूसरे को न छूने पायें।
- सात मिनट तक दोनों पाइप्स को यूं ही पकड़कर 2180 Hz की फ्रीक्वेंसी पर जैप करें।

● अब दोनों हाथों की कॉपर पाइप्स की अदला-बदली करें। यानि दाएं हाथ की पाइप को बाएं हाथ से पकड़े और बाएं हाथ की पाइप को दाएं हाथ में।

● एक बार फिर दोबारा सात मिनट तक पहले की तरह ही पाइप्स को मजबूती से पकड़कर 2180 Hz की फ्रीक्वेंसी पर जैप करें।

● अब जैपर का पॉवर स्विच ऑफ कर दें। कॉपर पाइप्स को छोड़ दें और सात मिनट के लिए हाथों को आराम दें। तैलिए / सूती कपड़ों को एक बार फिर नमकीन पानी में भिगोकर निचोड़ लें।

● एक बार फिर जैपर के पॉवर स्विच ऑन कर, बदली हुई 10KHZ फ्रीक्वेंसी पर सात मिनट के लिए जैप करें।

● इसके बाद, कॉपर पाइप्स को हाथों में अदल-बदल कर 10KHZ फ्रीक्वेंसी पर सात मिनट के लिए दोबारा जैप करें।

● एक बार फिर सात मिनट का ब्रेक लेकर पहले की तरह ही, एक और बढ़ी हुई 30KHZ फ्रीक्वेंसी पर सात-सात मिनट के दो चक्र जैप करें। यह आपकी जैपिंग प्रक्रिया का तीसरा और अखिरी सैट होगा।

● पूरी प्रक्रिया को रोजाना दिन में तीन बार, सात दिनों तक करें।

नोट: मैंने कॉपर पाइप्स को अपनी कखारियों, गरदन, जीभ, घुटनों और कुहनियों पर रखकर भी जैप किया है और बेहतर नहीं पाए हैं। दरअसल, शरीर के उत्क हिस्सों की त्वचा मुलायम होने की वजह से ब्लड में बिजली का प्रवाह ज्यादा असरदार तरीके से होता है।

हमें रोजाना तीन बार जैप क्यों करना चाहिए ?

शरीर में मौजूद बड़े आकार के पैरासाइट्स के भीतर कई छोटे पैरासाइट्स और असंख्य वायरस छुपे होते हैं। जब हम एक बार जैप करते हैं तो बेशक बड़े पैरासाइट्स खत्म हो जाते हैं लेकिन

पैरासाइट्स के भीतर जो पैरासाइट्स, एग, लार्वा और प्यूपा होते हैं, इन पर बिजली का कोई असर नहीं पड़ता और थोड़े समय के बाद से बाहर निकल आते हैं।

दूसरी और तीसरी बार जैप करने से बचे हुए छोटे पैरासाइट्स के साथ-साथ एग, लार्वा और प्यूपा पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। इसीलिए रोजाना तीन बार, अलग अलग समय पर, जैप करने की सलाह दी जाती है।

कोलाइडल सिल्वर (चांदी युक्त पानी) से पैरासाइट क्लींज

कोलाइडल सिल्वर, सिल्वर यानि चांदी के सूक्ष्म कणों के पानी में मिलने से बनता है। कोलाइडल धातु के ऐसे सूक्ष्म कण होते हैं, जो किसी द्रव्य पदार्थ (पानी वगैरह) में मिलाये जाने के बाद न तो उसमें घुलते हैं और न ही किसी आयनिक कंपाउंड का निर्माण करते हैं। चांदी के ये सूक्ष्म कण पानी में झूबते नहीं बल्कि तैरते हैं आमतौर पर शुद्ध पानी में मौजूद आयनिक सिल्वर, सिल्वर कोलाइडल, आयनिक सिल्वर कंपाउंड या सिल्वर प्रोटीन को कोलाइडल सिल्वर कहा जाता है। यह पूरी तरह से शुद्ध चांदीयुक्त पानी होता है।

चांदी का औषधीय उपयोग

प्राचीन काल से ही सिल्वर कंपाउंड का प्रयोग दवा के तौर पर होता रहा है 1880 में पहली बार सिल्वर नाइट्रेट के लिक्विड फॉर्म को नवजात बच्चों की आँखों को इन्फेक्शन से बचाने के लिए प्रयोग में लाया गया था। सौ से भी अधिक सालों से दुनियाभर के बर्न और ट्रोमा सेंटर्स में सिल्वर कीम्स को एण्टी- बायोटिक के तौर पर प्रयोग में लाया जाता रहा है। आयुर्वेद और यूनानी दवाओं में भी इसका जमकर प्रयोग होता है। 5 PPM* (Particles Per Million) या उससे अधिक गाढ़ा कोलाइडल सिल्वर इन्फेक्शन फैलाने वाले बैक्टिरिया को मारने में बेहद असरदार है।

सन् 1938 से पहले तक, एलोपैथी डॉक्टरों द्वारा कोलाइडल सिल्वर का बतौर एण्टी-बायोटिक काफी इस्तेमाल होता था। यह असरदार तो था पर जेब पर काफी भारी पड़ता था। नतीजतन 20वीं शताब्दी के चौथे-पांचवें दशक में सल्फा-ड्रग्स, पेनिसिलिन वगैरह को प्रयोग में लाया जाने लगा, जो सस्ती होने के साथ-साथ मरीज पर जल्दी असर करती थीं।

कोलाइडल सिल्वर कैसे काम करता है ?

फंगी, वायरस, बैक्टिरिया और दूसरे सिंगल सेल (एक कोशिका वाले) पैथोजेन जब कोलाइडल सिल्वर के संपर्क में आते हैं तब यह उनकी ऑक्सीजन मेटाबॉलिज्म क्षमता को निष्क्रिय कर देता है। इसके कुछ ही मिनटों में पैथोजेन मर जाता है और शरीर के इम्यून सिस्टम, लिम्फ ग्रॉथियों व दूसरे वेस्ट रिमूवल अंगों द्वारा शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है।

कोलाइडल सिल्वर आधुनिक एण्टी-बायोटिक से बेहतर कैसे है ?

आजकल इस्तेमाल में लाए जा रहे एण्टी-बायोटिक्स शरीर के लिए फायदेमंद एन्जाइम्स को भी नष्ट कर देते हैं। इसके बिलकुल विपरीत कोलाइडल सिल्वर सिर्फ सिंगल सेल पैथोजेन्स के एन्जाइम्स

को प्रभावित करता है। परंपरागत एण्टी बायोटिक्स में एक बड़ी खामी यह भी है कि इनके प्रयोग के बाद अक्सर सिंगल सेल बैक्टीरिया की संरचना और जीन्स में तब्दीली आ जाती है और इस्तेमाल की गयी एण्टी-बायोटिक को लेकर उनमें प्रतिरोधी क्षमता विकसित होने लगती है। कोलाइडल सिल्वर या सिल्वर के किसी अन्य रूप में इस्तेमाल से ऐसा नहीं होता और बैक्टीरिया पूरी तरह से नष्ट हो जाता है। कोलाइडल सिल्वर की एक खूबी यह भी है कि यह अन्य दवाओं के साथ किसी तरह की प्रतिक्रिया नहीं करता। इसीलिए इसके सेवन के साथ अन्य जरूरी दवाओं का सेवन किया जा सकता है। कोलाइडल सिल्वर के प्रयोग से शरीर में किसी भी तरह के टॉकिसन का निर्माण नहीं होता। यह पैथोजेन के ऑक्सीजन मेटाबॉलिजम प्रक्रिया में सहायक एन्जाइम के अलावा और किसी से कोई रिएक्शन नहीं करता।

डोजेज

शरीर से पैरासाइट्स व पैथोजेन्स को खत्म करने के लिए, रोजाना 50 मिली की मात्रा में कोलाइडल सिल्वर के सेवन से शरुआत करें। ऐसा चार दिन तक करने के बाद इसे छह सप्ताह तक रोजाना 20 मिली की मात्रा में लें। वजन के अनुसार (खासतौर पर बच्चों के मामले में) डोज को कम किया जा सकता है। इसके बाद कुछ दिनों के अंतर से यह प्रयोग दोबारा करें। उत्तम और निरोगी स्वास्थ्य के लिए बीच में कुछ ब्रेक देकर जीवन पर्यन्त इसका प्रयोग किया जाना चाहिए। ये दुनियां का सर्वश्रेष्ठ औषधीय एवं जीवन-रक्षक टॉनिक है।

कोलाइडल सिल्वर के प्रयोग के तत्काल बाद शरीर के वेस्ट रिमूवल सिस्टम (लिवर, किडनी, स्किन, फेफड़े और पेट) पर दबाव बढ़ जाता है। शुरू में फ्लू जैसे लक्षण, जैसे कि सिर दर्द, थकान, चक्कर, मिली, मास-पेशियों में दर्द वगैरह नजर आ सकते हैं। इस दशा में अधिक से अधिक मात्रा में सादा पानी का सेवन करें। शक्कर व सैच्युरेटेड फैट्स का सेवन न करें। कुछ ही दिनों में शारीर की सेल्फ हीलिंग क्षमता में उल्लेखनीय सुधार हो, आपको अपनी सेहत में चमत्कारी बदलाव देखने को मिलेगा।

उपयोग

कोलाइडल सिल्वर को मुँह से या बौतौर एनिमा प्रयोग में लाया जाता है। सेवन के कुछ समय के भीतर ही, यह अंतिंग्यो द्वारा अब्जॉर्ब कर लिया जाता है। उसके बाद यह ब्लड के जरिये कोशिकाओं तक पहुँचता है। सेवन के 3-4 दिन के भीतर टिश्यूज में सिल्वर की मात्रा इतनी हो जाती है कि वह कोशिकाओं की मरम्मत और शरीर को पैरासाइट मुक्त करने का अपना काम शरू कर सके। किडनी और लिम्फ सिस्टम को टिश्यूज में जमा सिल्वर को शरीर से बहार निकलने में 2-3 सप्ताह से ज्यादा से ज्यादा का समय लगता है। ऐसे में शरीर पर अपना गुणकारी असर दिखाने के लिए भरपूर समय होता है।

कोलाइडल सिल्वर न सिर्फ इलाज बल्कि बीमारियों की रोकथाम में बेहद भी असरकारी है। इसके सेवन से बैटीरिया, वायरस, फंगी आदि का खात्मा होकर सर्दी, फ्लू आदि इन्फेक्शन्स व ऐसी कई

दूसरी बीमारियों से भी आप बचे रहते हैं, जिनकी आपको जानकारी तक नहीं होती। आपने सुना ही होगा कि राजे-महाराजे और शेख-नवाब चिर युवा नजर आते थे। उसका एक कारण सिल्वर भी था। वे हमेशा चांदी के बर्तनों में ही खाना खाते थे।

इस तरह उनके शरीर को लगातार सिल्वर की सफ्टाइ होती रहती थी, जिससे उनका शरीर बीमारियों की चपेट में आने से बचा रहता था। शरीर को बीमारियों से लड़ने के लिए एनर्जी नहीं खर्च करनी पड़ती थी और एनर्जी का प्रयोग शरीर को स्वस्थ बनाये रखने में होता था। भीड़-भाड़ भरे इस युग में हम कब और कौन-से इन्फेक्शन का शिकार हो जाएं, इसकी हमें जानकारी नहीं होती। ऐसे में कोलाइडल सिल्वर का नियमित सेवन आपके लिए सुरक्षा कवच का काम करता है।

हर साल लोग दूषित पानी के चलते लो-ग्रेड ले लेकर गंभीर किस्म के इन्फेक्शन्स का शिकार होते रहते हैं। पांच लीटर पानी में महज 50 मिली कोलाइडल सिल्वर मिला देने भर से पानी शुद्ध हो जाता है।

साइंस की समस्या हो या फिर गले की खराश हो या नाक बंद हो; या फिर शिशु की आँख में इन्फेक्शन हो – इन सभी मामलों में कोलाइडल सिल्वर का उपयोग पूरी तरह से सुरक्षित और फायदेमंद होता है। खाज-खुजली, एगिजमा, जलने-काटने का घाव, फुंसी-फोड़े आदि त्वचा रोगों पर इसके बाहरी प्रयोग से शीघ्र लाभ होता है। तन की दुर्गन्ध का एक बड़ा कारण बैक्टीरिया हैं। सिल्वर वाटर को बतौर स्प्रे इस्टेमाल में लेकर इस समस्या से बचाव मुमकिन है। जलने के घाव पर कोलाइडल सिल्वर का प्रयोग रामबाण की तरह असरकारी है। इसके इस्टेमाल से न सिर्फ घाव जल्दी भर जाता है बल्कि जलने का निशान भी कम हो जाता है। कोलाइडल सिल्वर के नियमित प्रयोग से भी आप कई गंभीर किस्म के इन्फेक्शन आदि से बचे रह सकते हैं, सही मायने में चिर युवा बने रह सकते हैं।

प्रोडक्ट क्वालिटी

सबसे बेहतरीन कोलाइडल सिल्वर वह होता है जो बिना किसी रासायनिक प्रतिक्रिया के बनता है, जैसा कि कोलाइडल सिल्वर मेंकर से बनता है। इस प्रक्रिया में सिल्वर पार्टिकल्स पानी में रहते तो हैं लेकिन घुलते नहीं हैं। शुद्ध कोलाइडल सिल्वर का रंग क्लाउडी वाइट (सफेद बादलों सा) होता है। सिल्वर वाटर की औषधीय गुणवत्ता उसके PPM (गाढ़ेपन) पर निर्भर नहीं करती। तीन या पांच PPM का कोलाइडल सिल्वर जर्म्स को मरने में उतना ही असरदार होता है जितना कि अत्यधिक गाढ़ा सिल्वर वाटर।

निष्कर्ष

पैरासाइट्स को पनपने, विकसित होने के लिए एक विशेष वातावरण की जरूरत होती है। उसके बगैर वह जीवित नहीं रह सकता। ,ऐसे में अगर उचित खान-पान और क्लीजिंग थेरेपी के जरिये, यदि हम अपने शरीर के भीतर के अंगों को स्वस्थ बना दें तो उसमें पैरासाइट्स का विकसित हो

पाना नामुमकिन है। हमें चाहिए कि हम कोलोन व पैरासाइट्स क्लींज करें, स्वस्थ आहार लें , जंक फूड को पूरी तरह से ना बोलें, खाना खाने से पहले हाथ धो लें। वाशरूम के प्रयोग के बाद, बच्चों का डायपर आदि बदलने पर हाथ धोना न भूलें। अपनी हाइजिन हैबिट्स में सुधार लाकर पैरासाइट्स को परास्त किया जा सकता है, इसमें कोई दो राय नहीं।

पल्सर, जैपर और कोलाइडल सिल्वर के लाभ

पल्सर, जैपर और कोलाइडल सिल्वर से न सिर्फ आप पैरासाइट्स से छुटकारा पाते हैं, बल्कि उनके कारण होने वाली बीमारियों और समस्याओं से भी राहत के साथ-साथ शरीर में निम्नलिखित बदलाव महसूस करते हैं।

- बिल्कुल कम समय में ही मुँहासों से छुटकारा
- जोड़ों के मूवमेंट का बढ़ जाना
- क्रोनिक पेन से झटपट राहत
- कटने-छंटने आदि के घाव का जल्दी भर जाना
- सप्ताह भर बाद शौच में टेपवर्म का दिखाई देना
- श्वसन प्रक्रिया में सुधार और साइनस की प्रक्रिया की समस्या से राहत
- शरीर के pH लेवल का संतुलित हो जाना (ज्यादातर मामलों में)
- आँखों की लाली में कमी
- फ्लू और सर्दी-खाँसी से छुटकारा
- शरीर में जमा मेटल्स (धातु) और टॉक्सिन्स से निजात
- पॉजिटिव फीलिंग, सोच में स्पष्टता और गहरी नींद का आना
- शरीर, खासकर सांस और पांव से आने वाली बदबू में कमी
- डिप्रेशन और माइग्रेन से छुटकारा
- “पीएमएस” यानी महावारी के पहले नजर आने वाली तकलीफों से निजात
- सोरायसिस में लाभ
- रिंगवर्म से राहत, खाज-खुजली का खात्मा और त्वचा में निखार
- कान दर्द, दाँत दर्द से आराम
- ट्यूमर व वार्ट्स का सिकुड़कर गायब हो जाना
- योस्ट और कैन्डिडा जैसी फंगी का खात्मा
- डैन्ड्रफ से छुटकारा
- अल्सर में राहत

शंका-समाधान

1. क्या जैपर का इस्तेमाल पूरी तरह से सुरक्षित है ?

जी हाँ, यह पूरी तरह से सुरक्षित है। सिर्फ वे गर्भवती स्त्रियां जिनकी डिलीवरी करीब हैं; तथा वे लोग जिन्हें पसेमेकर लगा हुआ है उन्हें जैपर का प्रयोग नहीं करना है। जैपर के प्रयोग से शरुआती दिनों में, जैपिंग के तुरंत बाद पैरासाइट्स के नष्ट होने की वजह से तबियत बिगड़ी-सी जान पड़ती है परन्तु घंटे-दो घंटे में आप बिलकुल सामान्य हो जायेंगे।

2. जैपर के इस्तेमाल के दौरान इलेक्ट्रिक शॉक लग सकता है ?

9 वोल्ट की बैटरी या फिर एडाप्टर की सहायता से उतने ही बाल्ट की पॉवर सप्लाई से कभी किसी को शॉक नहीं लगता (यहाँ 9 वोल्ट इनपुट बोल्टेज है, जबकि आउटपुट बोल्टेज इससे भी कम हो जाता है)।

3. जैपर के इस्तेमाल के लिए सबसे सही समय क्या होता है ?

अपनी सुविधा के अनुसार आप किसी भी समय जैप कर सकते हैं।

4. कॉपर पाइप (जिन्हे जैपिंग के दौरान हम पकड़ कर रखते हैं) के काला पड़ जाने के बाद क्या करना चाहिए ?

इनका काला पड़ना बिल्कुल सामान्य है इससे जैपिंग की प्रक्रिया पर कोई असर नहीं पड़ता और न ही इससे किसी तरह का नुकसान पहुँचता है। आप स्कॉच ब्राइट (या अन्य कोई स्क्रब (और साबुन का प्रयोग कर, इन्हे साफ कर सकते हैं।

5. जैपिंग के दौरान कॉपर पाइप को किसी भी हाथ में पकड़ा जा सकता है या उन्हें पकड़ने का कोई सुनिश्चित तरीका है ?

आप किसी भी पाइप को किसी भी हाथ से पकड़ जैपिंग की शरुआत कर सकते हैं। यूं भी जैपिंग की प्रक्रिया में आपको कॉपर पाइप को हाथों में इंटरचेंज (अदला-बदली) करते रहना पड़ता है। बस इस बात का ध्यान रखें कि जैपर के स्विच ऑन होने पर दोनों पाइप्स एक-दूसरे को छूने ना पाएं।

6. आपकी राय में क्या जैपर, पल्सर, और कोलाइडल सिल्वर का दो सप्ताह तक, साथ-साथ प्रयोग उचित है ?

मेरा तो मानना है कि ऐसा ही होना चाहिए और इनको प्रयोग में लाने से पहले बेहतर नतीजों के लिए किडनी और एसिडिटी क्लींज अवश्य कर लें। इसके बाद पैरासाइट्स क्लींज करें। पैरासाइट्स क्लींज के पूरा होते ही लिवर क्लींज भी कर लें तो सोने पे सुहागा होगा। दो हफ्ते बाद तो आप ऐसा महसूस करेंगे कि आप पहले वाले से थके-थके शख्स न होकर एनर्जी से भरे युवा हो गयें हैं। एक बात और, जब आप जैपर और पल्सर का प्रयोग एक साथ कर रहे हों तो दो सप्ताह के बजाय एक सप्ताह का कोर्स ही काफी होता है।

7. अगर मैं आपके बताये समय से ज्यादा समय तक जैपर, पल्सर का प्रयोग करूँ तो क्या मेरी सेहत पर कोई बुरा प्रभाव पड़ेगा ?

जैपर, पल्सर के नियमित प्रयोग से कोई नुकसान नहीं होता। बस आपको एकस्ट्रा धन और समय खर्च करना होता है; और इसी की कमी सबके पास है। इसीलिए मैं जैपर के लगातार इस्तेमाल की सलाह कभी नहीं देता। फिर आपको इसकी जरूरत भी नहीं होती। एक बार शरीर से पैरासाइट्स के नष्ट होने पर उनके दोबारा पनपने में वक्त लगता है। ऐसे में जब जरूरत महसूस हो तो आप इसे दोबारा कर सकते हैं। हाँ कुछ ब्रेक देकर कोलाइडल सिल्वर पानी का सेवन नियमित कर सकते हैं।

8. क्या मैं किडनी या लिवर क्लींज करते समय भी जैपर का इस्तेमाल कर सकता हूँ ?

बिलकुल, और लिवर क्लींज के पहले पूरा पैरासाइट क्लींज करने से आपको बेहरीन नहीं मिलेंगे।

9. मेरे पास एक जैपर है। क्या इसे पल्सर के तौर पर भी उपयोग में लाया जा सकता है ?

जैपर और पल्सर दो बिलकुल अलग तरह के उपकरण होते हैं इनकी खूबियाँ बिलकुल अलग-अलग होती हैं। ये भिन्न-भिन्न फ्रीक्वेंसीज पर काम करते हैं। इनका इनपुट करंट अलग होता है।आउटपुट वेब भी अलग होती हैं। ये एक-दूसरे की पूरक आवश्यक होती हैं। वैसे अब **INDIAN ZAPPER DELUX** में पल्सर और जैपर और कोलाइडल सिल्वर एक ही उपकरण में तीनों उपलब्ध होने लगा है।

10. क्या कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने के लिए डिस्टिल्ड वाटर प्रयोग में ला सकता हूँ ?

आप डिस्टिल्ड वाटर को इस्तेमाल में ला सकते हैं, परन्तु इससे कोई विशेष लाभ नहीं होगा नल का सादा पानी हो, प्यूरीफाइड वाटर हो या मिनरल वाटर या स्प्रिंग वाटर - कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने के लिए सभी सामान रूप से उपयुक्त हैं।

11. कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले सिल्वर रॉड्स कितने समय तक चलते हैं ?

यह कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने के तरीके पर निर्भर करता है। वैसे 5-6 इंच के सिल्वर रॉड की एक जोड़ी से औसतन 5000 गिलास सिल्वर वाटर बनता है।

12. क्या कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाते समय पानी में नमक भी मिलाया जा सकता है ?

कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाते समय पानी में कुछ भी न मिलाएं, नमक तो हरगिज नहीं। नमक मिलाने से कोलाइडल सिल्वर बनने की प्रक्रिया तेज जरूर हो जाती है, परन्तु पानी में काफी अशुद्धियाँ आ जाती हैं, जो कोलाइडल सिल्वर के प्रभाव को खत्म कर देती हैं।

13. कोलाइडल सिल्वर वाटर बनाने का सही तरीका क्या है ?

कोलाइडल सिल्वर बनाते समय कोलाइडल सिल्वर मेकर को तब तक चालू रखें जब तक की पानी का रंग सफेद बदलो के रंग-सा, यानी क्लाउडी व्हाइट न हो जाये। ऐसा होने में लगभग 10 से 20 मिनट तक का समय लगता है।

14. एक समय में मुझे कितनी मात्रा में कोलाइडल सिल्वर बना लेना चाहिए ?

इसकी कोई सीमा नहीं है। आप जितना चाहे उतनी मात्रा में कोलाइडल सिल्वर बना सकते हैं। आम

तौर पर लोग एक बार में महज एक गिलास सिल्वर वाटर बनाते हैं और उसके चार डोज बनाकर दिनभर सेवन करते हैं इस बात को ध्यान में रखें कि कोलाइडल सिल्वर को रंगीन कांच की बॉटल में रखना है। पारदर्शी बॉटल में रखने पर वह लाइट से रिएक्शन कर काला पड़ जाता है।

15. चांदी के बर्तनों में खाना खाएं या फिर कोलाइडल सिल्वर वाटर का सेवन करें इनमें बेहतर क्या है ?

चांदी के बर्तनों में खाना खाने से आपके स्वस्थ्य को लाभ होने में काफी लम्बा समय लग सकता है, जबकि कोलाइडल सिल्वर के सेवन से रिजल्ट तुरंत मिलता है।



श्री वैदिक प्रतिष्ठान®

158-161B, गौतमनगर, नई दिल्ली - 110049

Email: vedic1804@gmail.com

कॉल करें **7290053590, 01147385181**

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY